मीडिया समन्वय कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति 1 मई 2017

तुर्की के राष्ट्रपति ने भारत को सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाने की वकालत की

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने भारत की यात्रा पर आए तुर्की के राष्ट्रपति रजब तैयब अर्दोआन को आज **'डिग्री आफ डाक्टर आफ लेटर्स** 'से सम्मानित किया।

जेएमआई से इस सम्मान को पाने पर खुशी का इज़हार करते हुए उन्होंने कहा कि भारत के स्वतंत्रता आंदोलन, तुर्की के खिलाफ़त आंदोलन और जेएमआई के गठन का आपस में गहरा रिश्ता है। गांधीजी ने अपने देश को स्वतंत्रता आंदोलन को खिलाफत आंदोलन से जोड़ कर ऐतिहासिक कार्य किया। जेएमआई भी उसी आंदोलन का हिस्सा है। जेएमआई के संस्थापक खिलाफ़त आंदोलन के अगुवा रहे हैं।

इस अवसर पर अपने संबोधन में अर्दोआन ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता की पुरज़ोर वकालत करते हुए कहा कि जब तक सवा अरब आबादी वाले इस देश को इसमें जगह नहीं दी जाती है तक तक विश्व व्यवस्था न्यायोचित नहीं हो सकती।

उन्होंने कहा, '' सुरक्षा परिषद से हम न्याय चाहते हैं लेकिन अभी का उसका जो ढांचा है, उसमें उससे न्याय नहीं मिल सकता। यह द्वितीय विश्व युद्ध से उपजी ज़रूरतों के अनुरूप बनाई गई व्यवस्था थी लेकिन तबसे अब दुनिया की स्थिति पूरी तरह बदल चुकी है और बदले परिस्थितियों के अनुरूप हमें इस ढांचे को बदलना होगा।''

उन्होंने कहा, '' सुरक्षा परिषद के पांच स्थायी सदस्य देशों के हाथ में पूरे दुनिया के देशों के भाग्य का फैसला देना उचित नहीं होगा। इसमें सवा अरब आबादी वाले भारत और इससे थोड़ी अधिक आबादी वाले मुस्लिम देशों को जगह देनी होगी। ''

उन्होंने कहा, '' दुनिया को आज अन्याय को हल करने में सक्षम संस्था की ज़रूरत है और इसके लिए भारत तथा तुर्की जैसे देश हर मंच पर आवाज़ उठा रहे हैं।''

जेएमआई के चांसलर लेफ्टिनेंट जनरल : रिटायर्ड : एम ए ज़की ने अर्दोआन को विश्वविद्यालय के डा एम ए अंसारी सभागार में आयोजित विशेष कान्वकेशन में इस सम्मान से नवाज़ा।

जेएमाआई के वाइस चांसलर प्रो तलत अहमद श्री अर्दोआन के सम्मान में प्रशंसात्मक उल्लेख पढ़ा।

तुर्की के राष्ट्रपति ने आतंकवाद पर कहा इस्लाम का नाम लेकर दहशतगर्दी करना इस्लाम नहीं बल्कि ईशनिंदा है। उन्होंने किसी देश का नाम लिए बिना कहा कि आज सीरिया और कुछ अन्य मुल्कों में आईएस से लड़ने के नाम पर दूसरे आतंकी संगठनों का इस्तेमाल करने की रणनीति चलाई जा रही है। लेकिन ऐसा करके आतंकवाद को कभी पराजित नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि आतंकवद को किसी धर्म से जोड़ना गलत है।

जेएमआई के वाइस चांसलर प्रो तलत अहमद ने अर्दोआन के प्रशंसात्मक उल्लेख में कहा कि मुस्तफ़ा कमाल पाशा अतातुर्क के बाद अर्दोआन आधुनिक तुर्की के सबसे महत्वपूर्ण नायक बन कर उभरे हैं। उन्होंने अपने देश को सेना के प्रभाव से मुक्त कराया और अपने देश की अर्थव्यवस्था को नई उंचाईयों पर ले गए।

उन्होंने जेएमआई और तुर्की के गहरे रिश्तों का उल्लेख करते हुए कहा कि यह भारत का पहला विश्वविद्यालय है जिसमें तुर्की भाषा की पढ़ाई शुरू हुई।

प्रो अहमद ने कहा कि जिस एम ए अंसारी के नाम वाले आडोटोरियम में श्री अर्दोआन को सम्मानित किया जा रहा है, उनका तुर्की से गहरा रिश्ता था। उन्होंने बताया कि जेएमआई के संस्थापक और 1928 से 1936 तक जेएमआई के वाइस चांसलर रहे अंसारी तुर्की के बलकान युद्ध में वहां डाक्टरों का एक दल लेकर गए थे और घायलों की तिमारदारी की थी।

इस समारोह में भारत में तुर्की के राजदूत शाकिर ओज़कान तोरूनलार सहित विभिन्न देशों के राजदूत और मिशन प्रमुख तथा विदेश मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित होंगे।

समारोह में अन्य लोगों के अलावा जेएमआई के प्रो वाइस चांसलर प्रो शाहिद अशरफ, रजिट्रार ए पी सिद्दीकी : आईपीएसः सहित विश्वविद्यालय के डीन, विभाग प्रमुख, अध्यापक और अनुसंधानकर्ता शामिल थे।

साइमा सईद

डेप्यूटी मीडिया कोऑर्डनैटर

font: Kruti Dev 010